eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

1857 की क्रांति के परिणाम एवं प्रभाव एक समीक्षात्मक अध्ययन

[1]रचित कुमार
[1]रिसर्च स्कॉलर, फैकल्टी ऑफ हिस्ट्री, राधा गोविन्द यूनिवर्सिटी, रामगढ, झारखण्ड

Received: 21 November 2023 Accepted and Reviewed: 25 November 2023, Published : 01 Dec 2023

Abstract

वर्ष 1857 इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। विशेषकर ब्रिटिश भारत पर इसके गहरे प्रभाव के लिए । इस वर्ष 1857 का भारतीय विद्रोह देखा गया, जिसे भारतीय विद्रोह, सिपाही विद्रोह या भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध भी कहा जाता है। यह विद्रोह ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के लिए एक बड़ी, लेकिन अंततः असफल चुनौती थी। ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियों, आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक असंवेदनशीलता के खिलाफ व्यापक आक्रोश से भड़के इस विद्रोह ने विभिन्न भारतीय गुटों को एकजुट किया, जिनमें असंतुष्ट सिपाही (ब्रिटिश सेवा में भारतीय सैनिक), राजकुमार, जमींदार और किसान आदि शामिल थे।

1857 के विद्रोह का प्रभाव दूरगामी था। इसने मुगल साम्राज्य और ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के अंत को चिह्नित किया, जिससे ब्रिटिश क्राउन के तहत प्रत्यक्ष ब्रिटिश शासन की स्थापना हुई। इस परिवर्तन ने भारत के राजनीतिक परिदृश्य को गहराई से बदल दिया, ब्रिटिश नियंत्रण को स्थिर करने के इरादे से सुधारों की शुरुआत की और साथ ही साथ भारतीय भावनाओं को शांत करने का भी प्रयास किया। विद्रोह ने भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना भी प्रज्वलित की, जिससे स्वतंत्रता की दिशा में भविष्य के आंदोलनों के बीज बोए गए। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य एक उन सभी परिवर्तनों को रेखांकित करते हुए एक ऐसा समावेशी विवरण प्रस्तुत करना है जिससे की सत्तावन की क्रांति के प्रभाव को आसानी से समझा जा सके।

शब्द संक्षेप– क्रांति, राष्ट्रीय विद्रोह, आन्दोलन, राष्ट्रीयता, कंपनियां, भारत, प्रभाव, परिणाम

Introduction

वर्ष 1857 भारतीय राष्ट्रीय इतिहास में एक ऐसे मोड़ के रूप में खड़ा है जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास की दिशा तथा दशा ही बदल कर रख दी। यह क्रांति जो सामान्य तौर पर एक सैनिक विद्रोह के रूप में शुरू हुई थी परन्तु धीरे धीरे इस क्रांति ने एक ऐसे राष्ट्रीय संघर्ष का रूप ले लिया जिसनें की ब्रिटिश सत्ता की नींव एक दम हिला कर रख दिया। प्रारंभ में जब ईस्ट इंडिया कंपनी की शासन व्यवस्था भारत में स्थापित हुई तो यहाँ के लोगों को इस बात का बिल्कुल भी एहसास नहीं था जो कंपनी के उद्देश्य भारत में व्यापार करना नहीं अपितु शासन करना था। लड़खड़ाता हुआ मुगल वंश इस बात की तरफ साफ तौर पर इशारा कर रहा था कि अब भारत में एक नयी शासन व्यवस्था का उदय होने वाला है। भारत में उस समय पर व्यापार करने के लिए पुतर्गाली, डच, अंग्रेज, डेन तथा फ्रांसिसी आये परन्तु इन सभी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को ही भारत में अंतिम तौर पर सफलता मिली जिसके पीछे मुख्य कारण उनकी संगठित सैनिक शक्ति तथा उनके अधिकारियों की दूरदर्शिता तथा सूझ दृ बूझ जैसे कारक विमान थे। कंपनी ने प्रारंभिक तौर पर अपने आपको केवल व्यापार तक ही सीमित रखा परन्तु जैसे दृ जैसे भारत में उसकी शक्ति को

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

विस्तार मिलता गया और वह अपने आपको मजबूत महसूस करने लगी वैसे ही उसने भारत के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करना शुरू कर। कंपनी का यह हस्तक्षेप सभी प्रकार के मामलों जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा प्रशासनिक, सैनिक रूप में देखा जा सकता है। कहने का अभिप्राय यह है कि एक समय के बाद भारतीय लोगों को यह एहसास होने लगा था की कंपनी के शासन द्वारा लगातार उनका शोषण किया जा रहा था और इसीलिए वे इस शासन व्यवस्था को या तो समाप्त करना चाहते थे या फिर बदलना चाहते थे। इस बदलाव करने की इच्छा ने ही भारतीय लोगों के मन में एक क्रांति की भावना का जन्म दिया जिसे की हम 1857 की क्रांति के नाम से जानते है। सत्तावन की क्रांति में भले ही भारतीय सैनिकों तथा क्रांतिकारियों को सफलता नहीं मिली परन्तु इतना जरुर कहा जा सकता है कि सत्तावन की क्रांति होने के बाद भारतीय शासन व्यवस्था को कंपनी के द्वारा बहुत ही व्यापक परिवर्तन किये गए।

प्रस्तुत शोष पत्र का उद्देश्य सत्तावन की क्रांति के बाद होने वाले उन परिवर्तनों को उजागर करना है जिसने की उस शोषणवादी व्यवस्था का अंत कर दिया जो की एक लम्बे समय से चली आरही थी। इसके साथ ही साथ उन परिवर्तनों के बारे में भी बात करना है जो की कंपनी के द्वारा सत्तावन की क्रांति के बाद भारतीय सामाजिक तथा प्रशासनिक व्यवस्था में किये गए।

1857 की क्रांति के बाद आने वाले परिवर्तन वर्ष 1857 भारतीय राष्ट्रीय इतिहास में एक ऐसे समय के तौर पर याद किया जाता है जिसने की भारत में एक नयी शासन व्यवस्था को जन्म दिया। चूँकि सन 1857 में भारतीय लोगों के द्वारा देश की आजादी तथा अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के खिलाफ एक बहुत बड़ी क्रांति की गयी जिसने की कंपनी के शासन व्यवस्था को जड़ से हिलाकर रख दिया। यह सत्तावन की क्रांति का ही परिणाम था जिसने कि कंपनी को यह सोचने पर मजबूर कर दिया की आखिर वे कौन से कारण थे जिनकी वजह से भारत में इतनी बड़ी क्रांति का जन्म हुआ। कंपनी के द्वारा कारणों का व्यापक तौर पर अवलोकन करने के बाद उसने उन सभी शोषणकारी व्यवस्थाओं को बदलने या फिर खत्म करने का भी प्रयास किया। सत्तावन की क्रांति के बाद कंपनी के द्वारा जो प्रमुख परिवर्तन किये गए उनका वर्णन निम्नलिखित है।

सत्तावन की क्रांति का महत्वपूर्ण परिणाम यह था कि इस क्रांति के बाद एक घोषणा की जाती है जिसे की महारानी विक्टोरिया के घोषणा पत्र के नाम से जाना गया। इस घोषणा पत्र को लार्ड कैनिंग के द्वारा 1 नवम्वर 1858 को इलाहाबाद के मिन्टो पार्क में पढ़ा गया था। इस घोषणा पत्र में सत्तावन की क्रांति के बाद आने वाले उन सभी परिवर्तनों के बारे में जिक्र किया गया था जो कि नए सिरे से भारत की प्रशासनिक तथा राजनैतिक व्यवस्था में लागू होने थे। उस घोषणा पत्र के कुछ प्रमुख बिन्दुओं का विवरण निम्न प्रकार से है।

1. भारत के शासन की बागडोर कंपनी के हाथों के निकालकर क्राउन को स्थानांतरित की जाती है। इसके साथ ही साथ अब गवर्नर जनरल को वायसराय कहा जाने लगा , लार्ड कैनिंग को भारत का प्रथम वायसराय नियुक्त किया गया।

2. इस घोषणा पत्र में यह साफ तौर पर स्पष्ट कर दिया गया कि ब्रिटेन सरकार सभी प्रकार के भारतीय मामलों के लिए उत्तरदायी होगी।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

3. इस घोषणा पत्र का जो एक अहम तथा मुख्य बिंदु था वह यह था कि भविष्य में कोई भी राज्य कंपनी के द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य में नहीं मिलाया जायेगा। इसके साथ ही साथ ब्रिटेन सरकार ने इस बात की भी घोषणा की कि कंपनी अपनी विस्तारवादी विलय नीति का त्याग करती है और सभी भारतीय नरेशों को दत्तक पुत्र गोद लेने का अधिकार वापस करती है ।

4. इसके साथ ही साथ घोषणा पत्र में इस बात का भी उल्लेख किया गया कि सभी भारतीय राजा तथा रजवाड़ों को यथास्थिति बनाये रखा जायेगा अर्थात उनके राज्य तथा क्षेत्र के साथ किसी भी प्रकार का कोई भी हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा।

5. चूँकि विद्रोह से पहले कंपनी के द्वारा भारतीय लोगों के सामाजिक तथा धार्मिक मूल्यों में हस्तक्षेप किया गया था अतरू क्रांति के बाद भारतीय जनता का विश्वास फिर से जीतने के लिए कंपनी ने इस बात की घोषणा की कि निकट भविष्य में कम्पनी के द्वारा भारतीय लोगों के सामाजिक तथा धार्मिक जीवन में किसी भी प्रकार का कोई भी हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा।

6. एक और बड़ा परिवर्तन जो की सत्तावन की क्रांति के बाद देखने को मिला वह यह था कि कंपनी से अपने सैनिक संगठन में बहुत बड़ा तथा व्यापक बदलाव कर दिया। वह बदलाव यह था कि क्रांति होने से पहले भारतीय तथा यूरोपीय सैनिकों का अनुपात 5–1 तथा अर्थात क्रांति से पहले सेना में 5 भारतीय सैनिकों पर एक यूरोपीय सैनिक भर्ती किया जाता था जिसका की क्रांति के दौरान ईस्ट इंडिया कंपनी को खामियाजा भुगतना पड़ा था वह यह था की भारतीय सैनिकों की संख्या अधिक होने के नाते वे यूरोपीय सैनिकों पर भारी पड़ रहे थे। इन्ही सब बातों को ध्यान में रखते हुए कंपनी ने अपने सैनिक संगठन में परिवर्तन कर दिया भारतीय तथा यूरोपीय सैनिकों का सेना में पहले अनुपात 5–1 था अब उसे बदलकर 2–1 कर दिया गया। इस सन्दर्भ में अगर हम सैनिकों की संख्या की बात करें तो पहले भारतीय सैनिकों की संख्या 2 लाख 38 हजार थी बाद में जिसे घटाकर 1 लाख 40 हजार कर दिया गया। सैनिक सगठन में एक और परिवर्तन देखने को मिलता है वह यह था कि क्रांति होने से पहले सेना में अवध तथा बगल के सैनिकों अधिकता थी परन्तु विद्रोह होने के बाद कंपनी ने सेना में पंजाबी तथा गोरखे सैनिकों की संख्या बढ़ाने की और ध्यान दिया। सैनिक संगठन में होने वाले परिवर्तनों के लिए कंपनी के द्वारा एक आयोग का गठन किया गया जिसे की पील आयोग कहा गया।

7. भारत की प्रशासनिक तथा राजनैतिक व्यवस्था को सँभालने तथा सुधारने के लिए एक नए अधिकारी की नियुक्ति की गयी जिसे की भारतीय राज्य सचिव के नाम से जाना गया। भारतीय राज्य सचिव की सहायता के लिए इसमें 15 सदस्यों की एक मंत्री परिषद् के गठन का भी इसमें प्रावधान किया गया। इन 15 सदस्यों में से 8 सदस्यों की नियुक्ति सरकार के द्वारा तथा बचे हुए 7 सदस्यों की नियुक्ति कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स के द्वारा की जाएगी।

इसके अलावा कंपनी ने क्रांति के के बाद बहुत ही निर्ममता पूर्वक इसका दमन किया। क्रांति के दमन करने में कंपनी ने किसी भी प्रकार की कोई भी मानवीयता का ध्यान नहीं रखा। क्रांति होने के बाद भी ब्रिटिश शासन ने भारतियों के प्रति प्रतिशोधपूर्ण रवैया ही अपनाया उन्हें जहाँ भी मौका मिलता वे भारतीय लोगों को कुचलने का प्रयास करते और उन्हें इतनी अमानवीय यातनाये देते जिसे की कोई भी सामान्य व्यक्ति सोच भी नहीं सकता था।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि सत्तावन की क्रांति के बाद जो भी परिवर्तन किये गए उन सभी परिवर्तनों ने भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक व्यवस्थाओं को एक नया तथा उर्जावान स्वरुप प्रदान किया। इसके साथ ही साथ इन सभी परिवर्तनों ने भारत के लोगों के अन्दर एक नयी उम्मीद जगाई क्यूंकि जो भी सकारात्मक परिवतर्न ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा उस समय भारत में किये गए थे उनसे उन लोगों को यह आभास होने लगा था कि शायद अब कंपनी के द्वारा अपनी शोषणकारी नीतियों में बदलाव करते हुए भारत के लोगों के हितों का भी ध्यान रखा जायेगा। परन्तु वास्तविकता इसके एक दम उलट होती है ऐसा इसलिए कहा जाता है क्यूंकि ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत में शासन समाप्त होने के वाबजूद में भारत के लोगों के शोषण उसी तरीके से जारी रहा जैसा की क्रांति होने के पहले से चला आरहा था। जिस कानून की वजह से भारतियों की उम्मीदें बहुत ज्यादा बड़ी हुई थीं वह था महारानी विक्टोरिया का घोषणा पत्र इस घोषणा पत्र में उन सभी परिवर्तनों के बारे में व्यापक तौर पर जिक्र किया गया था जो की ब्रिटिश शासन के द्वारा निकट भविष्य में होने वाले थे। इसके साथ ही साथ ब्रिटिशों के द्वारा इसी समय एक नया अधिनियम लाया गया था इस अधिनियम को हम सभी भारत शासन अधिनियम 1858 के नाम से जानते हैं इस अधिनियम में भी भारत की प्रशासनिक व्यवस्थाओं को संभालने के लिए एक नया पद सृजित किया गया जिसे की भारत सचिव का नाम दिया गया। इस सचिव की सहायता के लिए एक 15 सदस्यीय मंत्रिमंडल की व्यवस्था की गयी जिससे की भारत से सम्बंधित राजनैतिक तथा प्रशासनिक व्यवस्थों को अधिक समुचित तरीके से सुधारा जा सके। लेकिन अफसोस इन सभी नियम कानूनों के आने के बाद जो उस प्रकार के सकारात्मक परिणाम देखनें को नहीं मिले जिनकी उम्मीद सत्तावन की क्रांति होने के बाद की गयी थो।

यदि हम 1857 के संघर्ष की सफलताओ और इसके दूरगामी परिणामो की ओर दृष्टि करे तो इसने भारत मे अंग्रेजी साम्राज्य की जड़ों को हिला दिया। न केवल ईस्ट इण्डीया कम्पनी खत्म हो गई, बल्कि मुगल साम्राज्य सदा के लिये विनिष्ठ हो गया। भारत मे सीधे ब्रिटिश शासन का प्रारम्भ हुआ । भारत मे स्वधर्म का बोध तीव्र हुआ एवं भारत मे ईसाईकरण करने तथा भारत को एक ईसाई देश बनाने का स्वप्न समाप्त हो गया। रानी विक्टोरिया ने अपनी घोषणा मे भारत मे धार्मिक मामलो मे हस्तक्षेप न करने का आश्वासन दिया। इसके साथ अंग्रेजो ने भारत मे बसने का इरादा त्याग दिया और उन्होने अफ्रीका, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया जैसे देशो मे अपने स्थायी निवास बनाये, परन्तु भारत के बारे मे उन्हे अपना विचार त्यागना पड़ा ।1857 के पश्चात संघर्ष समाप्त न हुआ बल्कि कूका आन्दोलन फडको का संघर्ष चापेकर बन्धुओ के बलिदान, सावरकर के कार्यो, विदेशो मे क्रान्तिकारी गतिविधियो, गदर पार्टी के आन्दोलन, भगत सिंह एवं उनके साथियो के बलिदान तथा सुभाष चन्द्र बोस जैसे क्रान्तिकारियो के कार्यो से आलोकित हुआ। जहां वीर सावरकर ने 1857 के संघर्ष को पहली बार जंग–ए–आजादी घोषित किया वही यह संघर्ष देश के नौजवानो के लिए संजीवनी बुटी बन गया, साथ ही अंग्रेजो के भूत की भाँती भय और आशंका का प्रतीक बन गया। लार्ड लिनलियगो जैसे भारत के वायसराय को 1942 की क्रान्ति भी 1857 के महा संघर्ष जैसी लगी, अतः 1857 का महान संघर्ष अत्यधिक व्यापक था, तथा इसके परिणाम दूरगामी सिद्ध हुए।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

सन्दर्भ सूची–

1. चौधरी, वीसी०पी०, इम्पीरियल पालिसी आफ ब्रिटिश इण्डिया (1876–180) कलकत्ता, 1968.
2. टार्टर एल० जे०रू हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर क्वीन विक्टोरिया (1836–1880) दिल्ली 1966.
3. डाडवेल, एच०एचः ए० स्केच आफ दि हिस्ट्री आफ इण्डिया, लन्दन, 1925.
4. डे०एन०एल०, जियोग्रेफिकल डिक्शनरी इन एन्सिएण्ट एण्ड मिडेवियल इण्डिया कलकत्ता, 1927. 10623
5. डेविड्स, आर०बुद्धिस्ट, इण्डिया नई दिल्ली, 1952.
6. ताराचन्द, हिस्ट्री आफ दि फ्रीडम मूवमेन्ट इन इण्डिया खण्ड–1–4 पब्लिकेशन डिवीजन भारत सरकार, नई दिल्ली, 1962, 1967, 1972, 1974.
7. मेटकाफ, सी०टी० टु नेटिव नरेटिब्ज आफ म्यूटिनी
8. विलियम, सरजान के० ए हिस्ट्री आफ सिप्वाय वार इन इण्डिया भाग–1 लन्दन, 1867.
9. इनेस जे०जे० लखनऊ एण्ड अवध इन म्यूटिनी लन्दन, 1897.
10. थामसन स्टोरी आफ कानपुर।
11. बकलैण्ड सी०ई० बेंगाल अण्डर लेफ्टिनेन्ट गवर्नर्स खण्ड–11
12. दत्त, आर०सी०रू इकोनामिक हिस्ट्री आफ इण्डिया, गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1976.
13. आर०सी० इण्डिया इन विक्टोरियन एज, लन्दन, 1908.
14. निगम, एन0के0 देहली इन 1857, दिल्ली, 1957.
15. बनर्जी, ए०सी० कान्स्टीट्यूशनल हिस्ट्री आफ इण्डिया (1858–1919) खण्ड–2 मैकमिलन, कलकत्ता 1978.
16. भटनागर, जी०डी० अवध अण्डर वाजिद अलीशाह बनारस, 1968.
17. मसलदान, पी०एन० इवोल्यूशन आफ प्राविंशियल आटोनामी इन इण्डिया (1858–1950) बम्बई 1953.
18. मजूमदार आर०सी० दि सिप्वाय म्यूटनी एण्ड दि रिवोल्ट आफ 1857 कलकत्ता, 1957.
19. मजूमदार आर०सी० हिस्ट्री आफ दि फ्रीडम मूवमेन्ट इन इण्डिया खण्ड–1 कलकत्ता, 1962 खण्ड–3 कलकत्ता, 1963.
20. मजूमदार, आर०सी० हिस्ट्री आफ दि इण्डियन पीपुल एण्ड कल्चर खण्ड–9 बम्बई 1963.
21. मजूमदार, आर०सी० रूट्रगल फारफ्रीडम भाग – 2 भारतीय वि॥ भवन बम्बई, 1957.
22. मजूमदार, आर०सी० दि हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ दि इण्डियन पिपुल खण्ड–9 1850.
23. दत्ता के०के० बायोग्राफी आफ कुंवर सिंह एण्ड अमर सिंह।
24. फारेस्ट जी०डब्ल्यू: ए हिस्ट्री आफ दि इण्डियन म्यूटिनी खण्ड–1 लन्दन, 1904.
25. जयरियास, एच०सी०ई० रिनासेन्ट इण्डिया।
26. देसाई ए०आर० सोशल बैकग्राउन्ड आफ इण्डियन नेशनलिज्म ।
27. चन्द्रा विपिन फ्रीडम स्टूगिल।
28. मजूमदार, ए०सी०: इण्डियन नेशनल इवोल्यूशन मद्रास, 1917.
29. मजूमदार, वी०श हिस्ट्री आफ पोलिटिकल वार कलकत्ता, 1934.

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

30. मनसोर, निकोलसन और पेलडेरल मून (सम्पाकद) दि ट्रान्सफर आफ पावर, खण्ड–5 दि शिमला कान्फ्रेन्स, लन्दन, 1976.
31. मेहरोत्रा एस०आर० इमर्जेन्स आफ दि इण्डियन नेशनल कांग्रेस दिल्ली, 1971.
32. मेनन वी०पी० दि ट्रान्सफर आफ पावर, कलकत्ता, 1957.
33. मो० हबीब एण्ड खलिक अहमद निजामी (सम्पादक) ए काम्पिहेंसिव हिस्ट्री आफ इण्डिया, खण्ड–5 नई दिल्ली 1970.
34. म्योर रेमजेः दि मेकिंग आफ ब्रिटिश इण्डिया लन्दन, 1923.
35. मिश्वा, वी०वी०, एडमिनिस्ट्रेटिव हिस्ट्री आफ इण्डिया बम्बई, 1960.
36. मुखर्जी हरिदास एवं उमाः इण्डियाज फाइट फार फ्रीडम आर दि स्वदेशी मूवमेन्ट कलकत्ता, 1958.
37. रघुवंशी वी०पी०एस० इण्डियन नेशनल मूवमेन्ट एण्ड थाट आगरा, 1958.
38. बकलैण्ड, सी०ई० बेंगाल अण्डर लेफ्टिनेन्ट गवर्नर्स खण्ड–1.
39. रिजवी सैयद अतहर अब्बास, फ्रीडम स्ट्रगिल इन यू०पी० खण्ड–1–4 सूचना विभाग उ०प्र०, लखनऊ–1956.
40. इलिएटः हिस्ट्री आफ इण्डिया भाग 2 लखनऊ 1862.
41. रीजः ए पर्सनल नरेटिव आफ दि सीज आफ लखनऊ।
42. जोशी पी०सी० रू 1857 इन आवर हिस्ट्री इन रिवेलियन
43. शर्मा, राम विलाश इण्डियन लिटरेचर।
44. वाडिया, जी०एन० जीयोबाजी, आफ इण्डिया कलकत्ता, 1976.
45. सावरकर, वीडी० इण्डियन वार आफ इण्डिपेन्डेन्स 1857. बम्बई, 1957.
46. सिंह, आर०एल० इवोल्यूशन आफ रोटिलमेंट इन दि मिडिल गंगा वेली, बनारस, 1955.
47. सिंह, गुरुमुख निहाल, लैण्ड मार्क्स इन इण्डियन कान्स्टीट्यूशनल एण्ड नेशनल (1600–1919) खण्ड–1 दिल्ली, 1950. डेवलपमेन्ट
48. सिंह, हीरालाल, प्राब्लम्स एण्ड पालिसीज, बनारस, 1962.
49. सेन, एस०एन० एटीन फिफ्टी सेवन, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, 1958.
50. सेन, धीरेन्द्र नाथ, रिवोल्यूशन बाई कांसेन्ट कलकत्ता, 1963.